International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(3): 125-127

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(3): 125-127
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-01-2020
Accepted: 13-02-2020

डॉ. अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. सान्त्वना द्विवेदी
सहायक आचार्य, संस्कृत
डीएवी पीजी कॉलेज, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,
उत्तर प्रदेश, भारत

आध्यात्मरामायण के नैतिक पक्ष

डॉ. अशोक कुमार दुबे एवं डॉ. सान्त्वना द्विवेदी

सारांश
अध्यात्मरामायण में भगवान् भूतभावन एवं भगवती पार्वती के संवाद रूप में रामचरित का वर्णन दृष्टिगोचर होता है। राम जैसे युगपुरुष का इस भूधरा पर आविर्भाव जीव एवं जगत् को सहज गति को दुर्जनों के प्रकोप से बचाने हेतु होता है। भारतीय मनीषा के लिए राम एक भाव अवधारणा के स्तर पर सहज नहीं है, अपितु उनके ऐतिहासिक अस्तित्व और उसके माध्यम से चरितार्थ होने वाले मूल्यों को निरन्तर महत्व देते आये हैं।
अध्यात्मरामायण में नैतिकता का दर्शन प्रत्येक काल पर परिलक्षित होता है। वस्तुतः जीवन की नैतिक दृष्टि जो समाज को सुव्यवस्थित एवं मर्यादित करती है। वह राम के द्वारा सर्वत्र चरितार्थ होता है। अतः अध्यात्म रामायण हमें इस दिशा के द्वारा सर्वत्र चरितार्थ होता है। अतः अध्यात्मरामायण हमें इस दिशा में चिन्ह करने की प्रेरणा देता है।

मुख्यशब्द: नीति, कर्तव्यनिष्ठा, स्वावलम्बन, आचारसंहिता, अध्यात्मरामायण

प्रस्तावना
आध्यात्मरामायण के नैतिक पक्ष
पुरुषोत्तम राम भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मनीषा की तेजोमय मूल्यवता के केन्द्र बिन्दु हैं। राम जैसे युगपुरुष का इस भूधरा पर आविर्भाव ईश्वरीय संविधान की सार्वकालिक श्रृंखला का वह अभिनव सोपान है, जो जगत् व जीवन की सहज गति को दुर्जनों के प्रकोप व झंझापात से बचाने हेतु समय–समय पर अभिषाक्त होता है। जीवन में जो कुछ ग्राह्य, नैतिक, सत्य, आचरणीय, महत् और विहित है तथा उसे मर्यादित समुन्नत एवं महिमामय बनाने के लिए अपेक्षित है वह राम के रूप में चरितार्थ हुआ है। भारतीय मनीषा के लिए राम एक मात्र अवधारणा के स्तर पर सत्य नहीं है अपितु उनके ऐतिहासिक अस्तित्व और उसके माध्यम से चरितार्थ होने वाले मूल्यों को निरन्तर महत्त्व देते आये हैं। महाभारत के वनपर्व में राम की चर्चा आई है। ऋषि मार्कण्डेय युधिष्ठिर से कहते हैं कि–

सहस्त्रनेत्र प्रतिमो महात्मा यमस्य नेता नमुचेश्तच हंता।।
पितुर्निदेशानधः स्वधर्म वासं वने दाशरभिश्चकार।।
– (महा./वनपर्व)

आदिकवि वाल्मीकि नारद से पूछते हैं कि इस धरती पर गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, नीतिवान् कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है–

कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान कश्चवीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यों दृढ़व्रतः।।

दशरथ नंदन का परिचय आध्यात्मरामायण में वेदांत के सिद्धान्त रूपमें कराया गया है। सम्पूर्ण अध्यात्मरामायण शिव–पार्वती के संवाद रूप में वर्णित हैं। राम के अलौकिकता को वर्णित करते हुए महादेव जी कहते हैं कि–

रामः परात्मा प्रकृतिरेनादि–
रानन्द एकः पुरुषोत्त्मो हि।।7।।[1]

स्वमायया कृत्स्नमिदं हि सृष्ट्वा नभोवदन्तर्षहिरास्थितो यः।
सर्वान्तरस्थोऽपि निगूढ़ आत्मा स्वमायया सृष्टमिदं विचष्टे।।18।।[2]

राम का अवतार धर्म की संस्थापना के लिए हुआ था। धर्म का व्यवहारिक रूप नैतिक आधार पर ही प्रतिष्ठित होता है, इसलिए राम का सम्पूर्ण जीवन सर्वजन–कृतलोकपकारिता से युक्त नैतिक और मर्यादित है। राम का शील धर्म और नीति की भूमिका पर प्रतिष्ठित है। उन्होंने आरम्भ से अन्त तक अनीति, अनाचार और अधर्म का विरोध करके नीति, धर्म और मर्यादा को प्रतिष्ठित किया। वस्तुतः नैतिकता अपनी व्यापक भूमिका में औचित्य और मर्यादा का पर्याय हो सकती है। पुरुषोत्तम राम के जीवन के कुछ मर्म बिन्दुओं को लेकर हम अपने कथन को पुष्ट एवं प्रमाणित कर सकते हैं।
राम मर्यादा प्रिय तथा मर्यादा पुरुषोत्तम है। अतः सामाजिक मर्यादाओं का वे निष्ठा से निर्वाह करते हैं। वे जानते हैं कि गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख करता है। वह राजनीति को धर्म नीति से तथा नैतिकता से अनैतिकता को नियंत्रित करता है। वह जीवन को अपनी आलोक से आलोकित कर देता है। अतः मर्यादित समाज में गुरु की प्रतिष्ठा अनिवार्य है। राम इसका पूर्णतः अनुपालन करते हैं। गुरुवर अगस्त्य के आगमन पर राम कितने विनम्र तथा परम्परा प्रिय लगते हैं, इसका अत्यन्त हृदयग्राह्य वर्णन प्राप्त होता है–

तुमवाच द्वारपालं प्रवेश्य यथासुखम्।
पूजिता विविशुर्वेश्म नानारत्नविभूषितम्।।12।।
दृष्टवा रामो मुनीन् शीघ्रं प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः।
पाद्यार्घ्यादिभिरापूज्य गां निवेद्य यथाविधि।।13।।[3]

इसी प्रकार विश्वामित्र के प्रति भी उनके भाव दर्शनीय है। किसी भी व्यक्ति के चरित्र का उत्कर्ष उसके सम्पूर्ण अनुवर्ती समाज के लिए एक पाथेय होता है। व्यक्ति के चरित्र का उत्कर्ष नैतिक धरातल के बिना संभव नहीं है। लोक नायक के चरित्र के संयम, सत्यवादिता, सच्चरित्रता परमावश्यक बिन्दु हैं, जिसके आधार पर उसकी लोक छवि निर्मित होती है।
आध्यात्मरामायण में राग के इस नैतिकता का दर्शन प्रत्येक स्थल पर परिलक्षित होता है। आध्यात्मरामाण में निम्नबिन्दुओं के अन्तर्गत वर्णन प्राप्त होता है–

1. एक पत्नी व्रत तथा एक पतिव्रत
2. पूज्यों और गुरुजनों के प्रति स्नेह
3. बड़ों का छोटों के प्रति स्नेह

रामराज्य में अनेक सेवक–परिचर विद्यमान रहते हैं किन्तु सीता अपने प्रेम, आज्ञापालन, नम्रता, इन्द्रियसंयम, लज्जा और कार्यों का सम्पादन अद्वितीय तरीके से करती हैं–

सीता प्रेम्णानुवृत्त्या च प्रश्रयेण दमेन च।
भतुर्मनोहरा साध्वी भावज्ञा सा ह्रिया भिया।।31।।[4]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जीवन की नैतिक दृष्टि जो समाज को सुव्यवस्थित तथा मर्यादित करती है, राम के द्वारा सर्वत्र चरितार्थ है। आध्यात्मरामायण के नायक श्रीराम के चरित्र की पवित्रता और सामाजिक जीवन की शुचिता से ही रामराज्य की परिकल्पना संभव हो सकी है।
इसके अतिरिक्त आध्यात्म रामायण में चरित्र राम की शरणागत वत्सलता और पतितपावनी प्रकृति के व्यंजक जो वृतांत दृश्यमान हैं उन सबके मूल में करुणा की प्रधानता दिखाई पड़ती है। महर्षि गौतम के शाप से उनकी शिलाभूता पत्नी का उद्धार, बालि के भय से भयानक वन प्रान्त एवं पर्वतों में छिपकर जीवन व्यतीत करने वाले सुग्रीव की रक्षा तथा किष्किन्धा का राज्यदान, दण्डक वनवासी मुनियों को सर्व प्रकारेण संरक्षण प्रदान करने का आश्वासन, नर भक्षी राक्षसों द्वारा मारे गये ऋषियों के अस्थि समूह को देखकर पृथ्वी को राक्षसहीन करने की प्रतिज्ञा, शरणागत विभीषण को लंकाराज्य का दान आदि प्रसंगों में करुणा अथवा जीव दया भाव की अपूर्व छटा दिखाई देत है जिससे रहित मनुष्य को पशु कहने से पशुता भी अपमानित होती है। राम की इस करूणा संवलित उदारता की पराकाष्ठा दिखाई देती है, राम–रावण युद्ध में। उस अवसर पर जब वे राक्षसों को बैर भाव से स्मरण करने वाले अपने भक्त बताकर रण में प्राण त्यागने पर उन्हें मुनिदुर्लभ परम पद प्रदान करते हैं।
कृतज्ञता शुद्ध नैतिक जीवन का आधार है। राम के चरित्र में यह भाव भी सहज रूप दृष्टिगोचर होता है। गिद्धराज जटायु ने रावण द्वारा हरण कर ले जाती हुई सीता की रक्षा में प्राण अर्पित किये थे–

जटायुः सन्नया वाचा वक्त्राद्रक्तं समुद्वमन्।
उवाच रावणो राम राक्षसो भीमवीक्रमः।।32।।
आदाय मैथिलीं सीतां दक्षिणाभिमुखी ययौ।
इतो वक्तुं न मे शक्तिः प्राणांस्त्यक्ष्यामि तेऽग्रतः।।33।।
अनन्तकालेऽपि दृष्ट्वा त्वां मुक्तोऽहं रघुसत्तम्।
हस्ताभ्यां स्पृश मां राम पुनर्यास्यामि ते पदम्।।35।।
तथेति रामः पस्पर्श तदंग पाणिना स्मयन्।
ततः प्राणान्परित्यज्य जटायुः पतितो भुवि।।36।।[5]

राम ने उनका अन्तिम संस्कार अपने हाथों किया, पिता दशरथ से भी अधिक उनके प्रति ममता दिखाई और अन्त में सदेह मुक्ति प्रदान की। इसी प्रकार वायुनन्दन हनुमान जी द्वारा किये गये अनन्त उपकारों को आजीवन स्वीकार करने में वे गर्व का अनुभव करते रहे।
अध्यात्म रामायण के लोकानुप्रेरण जीवन–दर्शन के मूल आधार स्तम्भ है राम। इनके अतिरिक्त सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आदि प्रमुख पात्रों के चरित्र में आद्योपान्त व्याप्त संयम स्नेशीलता, निश्छलता, सत्यनिष्ठा, आदि मानवीय गुण जो नैतिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित है। कथा के नायक होने से राम का चरित्र सर्वाधिक प्रशस्त है। व्यक्ति के रूप में अषुण आत्मविश्वास स्थितिप्रज्ञता, अनासक्ति कर्तव्यनिष्ठा, स्वावलम्बन संगठन शक्ति, शौर्य, पराक्रम आदि तत्त्वों से समन्वित उनका अखण्ड तेजोमय जीवन सभी के लिए प्रेरणास्पद रहा है। बड़ों के प्रति श्रद्धा, समादर, आज्ञाकारिता और सेवा पूर्ण व्यवहार तथा छोटों पर स्नेह कृपा एवं क्षमाशीलता अत्यन्त ग्राह्य है। मित्र के रूप में सौहार्द का निर्वाह, राजा के रूप में प्रजा वर्ग की सुख–सुविधा का निरन्तर ध्यान, समत्व पर आधारित समाज, व्यवस्था का प्रवर्तन, लोक मत का समुचित सत्कार, ऊँच–नीच का भाव त्यागकर वन्य जातियों से घनिष्ठ सम्बन्ध की स्थापना, समाज के विभिन्न वर्गों के साथ शालीन व्यवहार कोल किरात आदि जन जातियों का हृदय से समर्थन का भाव प्रेरणास्रोत के रूप में भारतीय समाज के समक्ष प्रतिबिम्बित हुंआ है। मानव समाज से ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों तथा जड़–प्रकृति तक से आत्मीयता की स्थापना व्यक्तिगत, सुख–सुविधाओं को त्यागकर, स्वेच्छया दुःख एवं विपत्ति शंकुल जीवन का वरण, असत् तथा अन्याय की शक्तियों से आजीवन संघर्ष करते हुए, अंततः केवल धर्म निष्ठता और चारित्रिक दृढ़ता तथा नैतिकता से भौतिकवादी शक्तियों पर विजय प्राप्ति आदि कार्य व्यापारों से उनकी लोकमंगलवादी साधना साकार हो उठी है। अध्यात्मरामायण के राम ने अपनी लोकलीला में मानवीय गुणों के अद्भुत प्रकाश से मानव समाज के लिए एक मार्ग प्रशस्त किया है। आधुनिक परिदृश्य में मनुष्य बदल रहा है किन्तु उसकी मूल मनोवृत्तियाँ आज भी उसे पीछे की ओर खींच रही है। विज्ञान ने प्रकृति के साथ हमारे संघर्ष को तीव्र कर दिया है। मनुष्य एक सीमा तक प्रकृति पर विजय प्राप्त कर चुका है फिर भी उसकी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ती जा रही हैं। वह उसकी पूर्ति में मानवीय मूल्यों

और नैतिक मान्यताओं को तिलांजलि देता जा रहा है। द्वन्द्व, तनाव, कुण्ठा आदि से मनुष्य त्राहि–त्राहि कर रहा है। आदर्शवादी चिन्तन से जुड़े व्यक्ति को रूढ़िवादी करार दिया जा रहा है। मनुष्य अनेक स्तरों पर विभाजित है। उसके कार्यकलाप लक्ष्यहीन और असंगत होते जा रहे हैं। उसके समक्ष आदर्श और नैतिकता एक थोथी वस्तु बनकर रह गयी है। ऐसे संत्रास और घुटन से राम का चरित्र उसकी नीतिपरकता के सिद्धान्त आधुनिक पीढ़ी के लिए संबल हो सकते हैं। राम के समक्ष तो इससे भी विकराल संकट थे। एक तरफ राज्याभिषेक की पूर्ण तैयारी थी तो दूसरी तरफ चौदह वर्ष में जाने का आदेश। दोनों में रामसत्ता को नकारते हैं और माँ के आदेश का पालन करते हैं। इससे बड़ी नैतिकता का उदाहरण विश्व साहित्य में कदाचित् ही प्राप्त हो सकता है।

राम का आचरण गुरु–भाई, माता–पिता, पत्नी, प्रजा, नारी, सेवक, अनुचर सबके प्रति मर्यादित है। यह उनकी नैतिक सोच का ही परिचायक है। शुभ की चरम कल्पना राम हैं। राम परम तत्त्व हैं। वह ज्ञानियों का ज्ञेय, ध्यानियों का ध्येय, उपासकों का उपास्य और कर्मयोगियों की प्रेरणा का मूल स्त्रोत है। वह तो धर्मरथ पर आरूढ़ है। वह धर्म चेतना सर्वव्यापी और शाश्वत जीवन मूल्यों पर आधारित है, जो नैतिकता को जन्म देती है। उसके संयोजक तत्त्व जीवन के शाश्वत मूल्यों से सन्दर्भित हैं–जीवन के इन नैतिक मूल्यों के आधार पर ही राम अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करते हैं। उस धर्मरथ के शौर्य और धैर्य के पहिए हैं। सत्य और शील उसकी ध्वजा पताका हैं। बल–विवेक दम और परोपकार उसके चार घोड़े हैं–जो क्षमा, कृपा और समता रूपी रस्सी से आबद्ध हैं। ईश्वर भजन ही धर्मरथ का चतुर सारथी हैं। वैराग्य ढाल और संतोष कृपाण है। दान परशु और बुद्धि ही प्रचण्ड शक्ति विज्ञान ही धनुष है। निर्मल और स्थिर मन ही तरकस है। समता यम्, नियम आदि वाण हैं। ब्राह्मण और गुरु के चरणों में पूज्य भाव ही अजेय कवच है। इस प्रकार श्रेष्ठ मानवीय गुणों और शाश्वत जीवन मूल्यों को उत्कृष्ट तत्त्वों से उस धर्म रथ की रचना हुई है। जिस पर आरूढ़ होकर राम लोक पीड़क रावण का संहार करते हैं।

राम के साथ ही साथ उनके पिता श्री दशरथ भी सत्य के संवाहक हैं। जीवन को सार्थक परिणति देने के लिए सत्यनिष्ठ होना अनिवार्य है। महाराज दशरथ का महत्त्व भी इसीलिए है कि वे सत्य को सर्वोपरि धर्म मानते हैं–

तुलसी जान्यों दसस्थहिं धरमु न सत्य समान।
राम तजे जेहि लागि, बिनु राम परिहरे प्रान।।[6]

जहाँ तक रामकथा के पात्रों की नीतिज्ञता का प्रश्न हैं, वह पदे–पदे परिलक्षित की जा सकती है। राम, भरत, वशिष्ठ, हनुमान, जामवंत, विभीषण सभी नीतिकार हैं। चित्रकूट की सभा में लोक व्यवहार और नीतिमत्ता के श्रेष्ठ उदाहरण उपलब्ध होते हैं। आज के विषम स्थितियों में आध्यात्मरामायण के ये पात्र मार्ग दर्शन प्रदान करते हैं।

वस्तुतः 'नीति' का अर्थ–नय–नीति, क्रम या मार्ग होता है, अर्थात् ऐसी आचारसंहिता जिसका पालन करने से जीवन मर्यादित हो। अनीति, अन्याय, अधर्म आदि की ग्लानि हो, इसका पालन करने वाला नैतिक माना जाता है। राम काव्य की रचना 'राम' को केन्द्र में रखकर की गई है। राम का सम्पूर्ण जीवन धर्म और नीति का ही मूर्त रूप है। इसीलिए राम को धर्म का विग्रह कहा गया है। धर्म और नीति की प्रतिष्ठा के लिए ही राम ने शस्त्र धारण किया था। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है कि–

'पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृताहम्'[7]

राम का चरित्र इस सत्य की ओर भी संकेत करता है कि 'नीति' की स्थापना के लिए शस्त्र भी धारण किया जा सकता है। इसलिए यह सोचना कि विनय, अहिंसा और उत्सर्क ही 'नीति' के नियामत तत्त्व हैं पूर्ण सत्य नहीं है। लोक मंगल के लिए शस्त्र धारण करना भी नीति का ही अंग है। अध्यात्मरामायण हमें इस दिशा में भी चिन्तन करने की प्रेरणा देता है।

सन्दर्भ

1. अ.रा./बा.का./श्लोक 11
2. आ.रा./बा.का./श्लोक 1
3. आ.रा./उ.का./श्लोक सं0. 12, 13
4. आ.रा/उ.का./श्लोक सं0. 31
5. आ.रा./अ.का./32–36
6. तुलसी दोहावली, दोहा 219, गी.प्रे.
7. श्रीमद्भागवतगीता, अ. 10, श्लोक 31